

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 02/07/2016

● अंक - 573 ● तारीख - 03 जुलाई 2016, आषाढ कृष्ण - 14 ● रविवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया

● पृष्ठ - 01

अनमोल वचन (सत्यसाईं बाबा)



भगवान का विराट रूप

भगवान के विराट रूप के दर्शन के वही व्यक्ति अधिकारी हैं जो अपने अहम् को ईश्वरार्पण कर, ईश्वर की ही शरण लेते हैं (जैसे अर्जुन ने किया) तथा जो मौन भाव में ईश्वर द्वारा कही गई गीता को ध्यानपूर्वक ग्रहण करते हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है, वह विश्व के प्रत्येक प्राणी का अन्तःप्रेरक है।
—सत्य साईं बाबा

दोहावली

**राम नाम निज मूल है, कहै कबीर समुझाय।
दोई दीन खोजत फिरै, परम पुरुष नहिं पाय।।**

इस संसार सागर में राम का नाम ही मुख्य है अर्थात् सत्य स्वरूप राम का नाम ही मोक्ष प्राप्त करने का आधार है। हिन्दू और मुसलमान भेदभाव के भ्रम में पड़कर खोजते फिरते हैं अर्थात् हिन्दू राम को ढूँढते हैं और मुसलमान अल्लाह को जबकि दोनों एक हैं।

**चहै अकाश पताल जा, फोड़ि जाहु ब्रह्माण्ड।
कहैं कबीर मितिहै नहीं, देह धरे का दण्ड।।**

कबीर दास जी जीव को समझाते हुए कहते हैं कि चाहे आकाश पाताल में ले जाओ या ब्रह्माण्ड फोड़कर निकल जाओ किन्तु तुम्हें शरीर धारण करने का दण्ड भोगना ही होगा अर्थात् प्रारब्ध का भोग भोगना ही होगा चाहे कोई भी उपाय करो।

हरि सुमिरन

**अवसर पाकर गुणगुना, हरि सुमिरन में झूम।
मस्त मगन ताली बजा, झूम-झूम कर झूम।।**

भावार्थ :- मनुष्य को भक्ति भावना में नित्य गुणगुनाना चाहिए। भगवान के स्मरण में झूम-झूम कर मनन, भजन, गुणगान करना चाहिए। मस्त और मगन होकर तालियां बजा-बजा अपने प्रेम का प्रदर्शन करना चाहिए। ये सभी भक्ति श्रेष्ठ के लक्षण हैं।

आओ नर रूपी नारायण की सेवा करें

आओ आज हम सेवा के माध्यम से ज्ञान को हासिल करें। जिसके प्राप्त हो जाने पर, इस धरती पर सत्कार्यों के माध्यम से स्वर्गिक सुख की प्राप्ति होती है। राम हमारे हृदय में, मर्यादा आचरण में, हमारा देह ही देवालय हो। अपने पुरुषार्थ से ही हम पुरुषोत्तम होने का प्रयास करें तो हमें पता चलेगा कि अयोध्या हमारी है और हम नर रूपी नारायण की सेवा करते हैं।

स्वयं बनाए अपना रास्ता

आपने यह कहावत जरूर सुनी होगी - 'लीक छाड़ि तीनों चलें, शायर, सिंह, सपूत।' यानी कि सच्चा कवि, शेर और सुपुत्र हमेशा बने बनाए रास्तों को छोड़कर नए रास्तों पर चलते हैं। ये वे लोग होते हैं, जो अपने लिए खुद रास्ता बनाते हैं और बाद में इनके बनाए गए रास्ते पर दुनिया चलती है। ऐसे लोगों को आप नेतृत्व करने वाला कह सकते हैं। सच तो यही है कि विश्व का आज जितना भी विकास हुआ है, जिसने हमारे जीवन को इतना आसान बनाया है, वह ऐसे ही लोगों के कारण संभव हो सका है, जिन्होंने बने बनाए रास्ते पर चलने से इंकार कर दिया था। हालाँकि रास्ते तो थे और वे चाहते, तो उसी पर चलकर अपना जीवन पूरा कर सकते थे, लेकिन उन्हें वह स्वीकार नहीं था। उनके अन्दर कुछ कर गुजरने का जो तूफान उठ रहा था, उसके कारण उन्होंने नए रास्ते पर चलने का निर्णय लेकर दुनिया के लिए एक नया रास्ता तैयार किया।

एमटीसीआर का सदस्य बना भारत



भारत औपचारिक तौर पर मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर) का सदस्य बन गया। विदेश सचिव एस जयशंकर ने दिल्ली में फ्रांस, नीदरलैंड और लक्जमबर्ग के राजदूतों की मौजूदगी में एमटीसीआर में

शामिल होने के दस्तावेज पर हस्ताक्षर किया। भारत के आवेदन पर सदस्य देशों द्वारा आपत्ति करने की दस दिनों की समय सीमा वाशिंगटन में पीएम नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की मुलाकात के

एक दिन पहले छह जून को पूरी हो चुकी थी। इस लिहाज से 34 सदस्यीय एमटीसीआर का सदस्य बनने की सभी औपचारिकताएं भारत पूरी कर चुका है। भारत ने एमटीसीआर की शर्तों और जिम्मेदारियों को

स्वीकार करने संबंधी सूचना इस संगठन के संचालन की जिम्मेदारी संभाल रहे फ्रांस को भेज दी है और उसे सभी सदस्य देशों की सहमति भी मिल चुकी है।

चिन्तन-मनन



धन की प्राप्ति के उद्देश्य से कार्य करने पर मन संसार में रम जाता है, इसलिये सांसारिक कार्य बड़ी सावधानी के साथ केवल भगवत्प्रीति के लिए ही करना चाहिये। इस प्रकार से भी अधिक कार्य न करें, क्योंकि कार्य की अधिकता से उद्देश्य में परिवर्तन हो जाता है। सांसारिक पदार्थों और मनुष्यों से मिलना-जुलना कम रखना चाहिये। संसार संबंधी बातें बहुत ही कम करनी चाहिये। बिना पूछे न तो किसी के अवगुण बताने चाहिये और न उनकी ओर ध्यान ही देना चाहिये।

नाशते में दलिया खाने से बढ़ता है खून और कम होता है वजन



लो कैलोरी, हाई फाइबर, बहुत सारे विटामिन्स और प्रोटीन्स की मात्रा लिए दलिया का उपयोग ज्यादातर लोग सुबह नाश्ते में करते हैं। यह खाने में बहुत लाइट है। साथ ही दिनभर के लिए सारे जरूरी न्यूट्रिएंट्स की पूर्ति भी इससे हो जाती है। दलिया खाकर सेहत को किस तरह से फायदा पहुंचाया जा सकता है, आइए जानते हैं।

1. हीमोग्लोबिन बढ़ाता है दलिया आयरन का बहुत ही अच्छा स्रोत है, जो शरीर के लिए जरूरी होने के साथ ही हीमोग्लोबिन भी बढ़ाता है। साथ ही शरीर के तापमान और मेटाबॉलिज्म को भी बैलेंस करता है।
2. वजन कम करता है। कार्बोहाइड्रेट की उचित मात्रा वाले दलिया को ज्यादातर लोग सुबह नाश्ते में खाते हैं, क्योंकि हल्का होने के साथ ही वजन कम करने और डायबिटीज के रोगियों के लिए भी यह बहुत ही फायदेमंद है। साथ ही इसकी थोड़ी सा मात्रा खाने से पेट भर

जाता है जिससे ओवरइटिंग से बचा जा सकता है। डायबिटीज के मरीज दलिया खाकर बहुत जल्द ग्लूकोज लेवल को कंट्रोल कर सकते हैं। टाइप-2 डायबिटीज में फायदेमंद, कॉर्डियोवैस्कुलर सिस्टम सही रखता है, ब्रेस्ट कैंसर से बचाता है, एनर्जी देता है, पाचन में सहायक होता है, हड्डियों को मजबूत बनाता है। इप-2 डायबिटीज में फायदेमंद दलिया और ऐसे ही प्रकार के साबुत अनाज में मैग्नीशियम की भरपूर मात्रा होती है। मैग्नीशियम लगभग 300 प्रकार के

एंजाइम्स बनाता है, खासतौर पर ऐसे एंजाइम्स जो इंसुलिन सेक्रेशन में मददगार होते हैं। साथ ही ग्लूकोज की जरूरी मात्रा ब्लड तक पहुंचाते हैं। रोजाना इसका सेवन करने से टाइप-2 डायबिटीज की संभावना को 30 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है।
4. हड्डियों को मजबूत बनाता है दलिया कैल्शियम और मैग्नीशियम का खजाना होता है, जो हड्डियों को स्ट्रॉन्ग रखता है। इसके साथ ही दलिया खाने से पित्त की पथरी भी दूर होती है।

हम भीतर जितने खाली रहेंगे, जीवन में उतने ही शांत रहेंगे

सांसारिक जीवन में भराव की जितनी जरूरत है, आध्यात्मिक जीवन में खालीपन का उतना ही महत्व है। हम संसार में खाली रह ही नहीं सकते। दुनिया ऐसे ही चलती है। कोई किसी से छीनकर भर रहा है और जिसका छिन जाता है, वो दोबारा भरने की तैयारी करता है। अध्यात्म में इसका उल्टा है। अध्यात्म कहता है थोड़ा खालीपन, थोड़ा कोरा होना भी जरूरी है। इसीलिए भीतर के शून्य की बात कही जाती है। हम भीतर जितना खाली रहेंगे, उतने शांत रहेंगे और भीतर जितने भरे हुए रहेंगे,

अशांत रहेंगे। जब संसार में उतरें तो खालीपन न रखें, भराव से झगड़ा न रखें। संसार, संसार की तरह ही चलेगा। उसमें ज्यादा उलझन पैदा न करें, लेकिन जैसे ही अपने भीतर उतरें, फौरन खालीपन के महत्व को समझें। लोग हमसे पूछे हैं - आखिर यह खालीपन होता क्या है और मिलेगा कैसे ? जिनके जीवन में गुरु आए हैं, वे खालीपन को समझ सकेंगे, क्योंकि गुरु का काम ही है भीतर जाकर सफाई कर देना और इसके लिए वह ध्यान सिखाता है। ध्यान सफाई की उस क्रिया का नाम है,



जो भीतर खालीपन पैदा करता है। शास्त्रों में लिखा है - 'आचार्यो मृत्युः' यानी आचार्य मृत्यु है। सीधी-सी बात है गुरु के पास गए और हमारी उस बात की मृत्यु हो जाएगी, जिस बात को संसार ने जीवन माना है। हम बाहर जहां-जहां जीवन ढूँढते हैं, दरअसल

वहां होता नहीं है, इसलिए लोग अपना जीवन जीने के लिए दूसरे का जीवन छीनने लगते हैं। भीतर उतरते ही आप अपने जीवन से परिचित हो जाते हैं और जो अपनी जिंदगी को जान गया, वो दूसरे की जिंदगी का भी मान करेगा।

कड़वे प्रवचन : मुनि तरूण सागर

बतौर उदाहरण-तुम्हारी जेब में 90 रुपए हैं तो उसका आनंद लो। 100 रुपए में जो 10 कम है, इसका दुःख मत करो। 100 करने के चक्कर में मत पड़ो क्योंकि 100 तो



पूरे कभी होंगे नहीं, मगर यह हो सकता है कि जो 90 हैं, वे भी चले जाएं। सम्राट सिकंदर के भी 100 पूरे नहीं हुए तो फिर तुम किस खेत की मूली हो ? तुम तो मूली भी बहुत मामूली हो। मकानों में जिस प्रकार कई कमरों के साथ एक शौचालय भी होता है, और शौचालय में जितना समय एक व्यक्ति देता है। इतना ही समय एक व्यक्ति को राजनीति में देना चाहिए। दर-असल जीवन में राजनीति का महत्व शौचालय से ज्यादा कतई नहीं होना चाहिए। कारण की फ्रिज में ज्यादा देर तक रखा हुआ पानी बर्फ बन जाता है, और रात-दिन राजनीति में रचा-पचा आदमी भी घाघ हो जाता है। अगर आप मां-बाप हैं तो बच्चों के साथ आत्मीयता पैदा कीजिए। बच्चों से दूरियां नहीं होनी चाहिए। अपने बच्चों के लिए थोड़ा समय जरूर निकालिए, उनके साथ बैठिए और बताइए। क्योंकि आपकी सबसे बड़ी संपत्ति तो वही हैं। पैसा कमाने में इतने मशगूल मत हो जाना कि बच्चे हाथ से निकल जाएं। बच्चे बिगड़ गए तो फिर पैसा कमा कर भी क्या करोगे ? बच्चे को बच्चा इसलिए कहते हैं क्योंकि उसे बचाना पड़ता है। वह स्वयं बचना नहीं जानता। उसे बुरी नजर और बुरी संगत से बचाइए, वरना कल तुम्हारा बड़ा बुरा होगा।

मानव मन के बोल

मानव मात्र एक समाज



गतांक से आगे...

ऐसी लगन लग गई, ये देखो मनु भाई दौड़ रहे हैं, इधर योगेश अग्निहोत्री दौड़ रहे हैं, किशन जी जोशीजी की दौड़ चालु है। हमारे सोहन लाल जी सा., डॉ. एन.एस. कोठारी जी। मनोहर जी पारीक जी, झुंझुनू वाले बाईजी, गिरधारी कुमावत, श्याम कुमावत, प्रशान्त भैया, कल्पना जी, आर. एल. गुप्ता जी, नर्बदा जी, सुनीता जी, रेणु जी, सतीश जी वर्माजी, हमारे लालचंद जी जैन सा., हॉ आनंद का ऐसा वातावरण बना भाई सा। कैलाश जी भाई सा., ऊँट गाड़ी निकालें और ऊँटगाड़ी पर माईक लगा दिया और मैं भी उसमें बैठा। भाइयों-बहनों, आपके परिवार के अतिरिक्त कपड़ों को उन दीन-दुखियों को पहनाएँ जाएंगे, जिनके पास वस्त्र नहीं हैं। भूख को भोजन, बीमार को दवा। दीन-दुखियों को वस्त्र, यही हैं नारायण सेवा। एक क्रांति सेवा की पी.एण्ड टी. कॉलोनी में, ओ हो! महाराज ऐसा आनन्द का माहौल बसता, ऊँटगाड़ी में कपड़े, ऊँटगाड़ी में रिकॉर्ड बज रहा है।

तेरे द्वार खड़ा एक जोगी।

ना माँगे हीरा-मोती, माँगे कपड़े।

ये बात दिसम्बर की है, दिसम्बर की 16 तारीख को तीन गाड़ियाँ एक जगदीश मंदिर से नीचे उतर के गुलाब बाग तक, एक गाड़ी सुन्दरवास तक और एक गाड़ी गई बाबूजी फतेहपुरा चौराहा, बड़गाँव साईड में, और खूब कपड़े इकट्टे हुए, किसी ने अनाज भी दिया। ये क्यों कर रहे हैं? 20 साल की उम्र में जो मैं बंद कमरे में रोया करता था कि भगवान कुछ करा देना, भगवान मैं कुछ जानता नहीं। जैसे ध्रुव भक्त ने कहा, मुझे तो वरदान माँगना नहीं आता। भगवान बोले-बेटा वरदान माँग ले। वरदान माँगना नहीं आता, मुझे कुछ करना नहीं आता ठाकुर, आप ही भूल दिखाकर उसे मिटाकर अपना प्रेम प्रदान करो।

क्रमशः अगले अंक में...

सम्पादकीय

चाहे व्यक्ति हो या विश्व, कोई ऐसा नहीं है, जो शांति नहीं चाहता, लेकिन मुझे लगता है कि कोई ऐसा नहीं है, जो सचमुच में शांति चाहता है। शांति की इच्छा तो हर कोई रखता है, लेकिन इसे चाहता कोई नहीं है। हर कोई इससे बुरी तरह से घबराता है। इसे ग्रहण करके इसके साथ रहने का साहस किसी में नहीं है। इसके बावजूद हर कोई यही करता है। कि उसे शांति चाहिए।

हम दार्शनिकों के पास जाते हैं। साधु-महात्माओं के पास जाते हैं। शिक्षक और तंत्रिकों के पास जाते हैं और उनके पाँवों पर अपना मस्तक रखकर गिड़गिड़ाते हैं कि 'हम क्या करें कि शांति मिले?' 'हम क्या करें कि शांति मिले,' अपने आप में ही विरोध से भरा हुआ वाक्य है। शांति करने से नहीं मिलती। शांति के लिए तो जरूरी है कि आप जो कर रहे हैं, उसे करना बन्द कर दें। कुछ न करने की प्रक्रिया में शांति निहित है, करने की प्रक्रिया में नहीं। जब हम कुछ करने की सोचेंगे, तो उस करने के दौरान अशांतियाँ उत्पन्न होंगी। शांति के लिए तो जरूरी है कि करना बंद कर दिया जाए और हम हैं कि अपने गुरु से पूछ रहे हैं कि 'हम क्या करें कि शांति मिले।'

यदि न करना ही शांति प्राप्त करने का तरीका है, तो क्या हम सचमुच न करने की स्थिति को स्वीकार करने को तैयार हैं? बिस्कुल भी नहीं। यहाँ न करने से मेरा तात्पर्य अकर्मण्यता से नहीं है।

शांति के लिए एक बहुत प्यारा शब्द है-'अमन'। अमन का अर्थ ही है 'जहाँ मन न हो। जहाँ मन नहीं होगा, वहाँ शांति होगी और जहाँ मन होगा, वहाँ शांति नहीं रह सकती। ये दानों एक जगह बैठ ही नहीं सकते। जन्मजात विरोध है इस दोनों का और हम हैं कि इन दोनों को एक-साथ पाना चाहते हैं। तो फिर भला यह संभव कैसे होगा?

यदि कोई व्यक्ति सचमुच में शांति पाना चाहता है, तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे ऐसा करने से रोक नहीं सकती। यह कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है, जिसको बिना मोल चुकाए आप पा नहीं सकते हैं।

संत से आया जीवन में बसंत

'संत श्री सलिल जी ने प्रदान किया कृत्रिम पैर नारायण सेवा में'



सकारात्मक सोच और परोपकार के भाव जीवन की दशा और दिशा बदलते हैं। लौकिक साधनों की उपलब्धि ही सफलता नहीं हैं, आध्यात्मिक वैभव भी होना चाहिए। यह बात देश के जाने माने कथाकार भागवताचार्य पूज्य संत डॉ. संजय कृष्ण जी सलिल ने नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहीं। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्थान के विभिन्न निःशुल्क सेवा प्रकल्पों का अवलोकन कर उन्होंने सेवा कार्यों की सराहना की उन्होंने संस्थापक चैयरमैन श्री कैलाश जी मानव से भी भेंट की। श्री मानव जी ने उन्हें संस्थान साहित्य भेंट किया। संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल ने बताया कि सलिल जी महाराज ने संस्थान के मानव मन्दिर में बनासकांठा (गुजरात) के जितेन्द्र भाई साधु को कृत्रिम पैर प्रदान किया। श्रीमती अग्रवाल ने बताया कि जितेन्द्र भाई सन 2014 के एक सड़क हादसे में अपना पैर खो बैठें थे। कृत्रिम पैर लगने से अब वे आसानी से चल-फिर सकेंगे। उन्होंने बताया कि सेवा के इस मन्दिर में संतश्री के सान्निध्य में उन्हें नव बसंत प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर निदेशक वंदना अग्रवाल, देवेन्द्र चौबीसा, पलक अग्रवाल और महिम जैन न संत श्री का अभिनन्दन किया।



मुस्कान मानवता की
(मानव धर्म शृंखला का षष्ठम् (6) पुष्प)

बोधो को प्राप्त होईये, भगवान बुद्ध ने कहा था "बुद्ध शरणम् गच्छामि, संघम् शरणम् गच्छामि, धम्मम् शरणम् गच्छामि" मैं सोच रहा था, धम्मम् शरणम् गच्छामि क्या होता है ? प्यासे को पानी पिलाना, अपने भाई को गले लगा लेना, अनाथों के नाथ बन जाना, दुखी को सुखी कर देना, बीमार को स्वस्थ कर देना, अपने धन के एक अंश से धर्म लाभ कमा लेना, 10 प्रतिशत अपनी कमाई का हिस्सा गरीबों के लिए निकालना चाहिए, ये धर्म है। अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, अपने बन्धु-बान्धवों की सहायता करनी चाहिए, अपने गुरु को आदर देना चाहिए, ये धर्म है। सब तीर्थों की कृपा आप पर बरस जाये, सब तीर्थों का जल आपको निर्मल कर दे और धर्म के सच्चे स्वरूप को समझकर प्रतिपल, हमारे क्षण-क्षण को आनन्दित कर दें, ये धर्म है। धर्म ना बाहर की सज्जा है, बनावट धर्म नहीं है, ये करोड़ों रुपया खर्च करके शादियाँ करना धर्म नहीं है। अभी मैं परसों ही पढ़ रहा था, एक अरबपति ने करोड़ों रुपये अपनी बेटी की शादी में खर्च किये और सभी बारातियों को एक-एक कार भेंट में दे दी। अरे उनके पास 10-10 कारें पहले से हैं भाइयों। आपने धापे हुए को धपाया, ये धर्म नहीं हुआ, आप भूखे को भोजन करावाइये ना। आप वस्त्र हीन को वस्त्र दीजिये ना। आप जाइये हॉस्पिटल में, आइये नारायण सेवा संस्थान में, जैसे हमारे अभी सुरेन्द्र जी चण्डीगढ़ से पधारे, आप इन दीन-दुखियों के माथे पर हाथ रख दीजिए, इनके चेहरे पर मुस्कराहट ले आइये, इनको कहिये क्यों उदास होते हो ? मैं हूँ ना। आप कहिये तो सही, आप प्यार दीजिये तो सही, आप मोहब्बत से बोलिये तो सही, आप सत्य का व्यवहार कीजिए, यही धर्म है।

गुरु के जीवन में आने पर प्रेम जागेगा व श्रद्धा उत्पन्न होगी

जब भी हम किसी को गुरु बनाने जाएंगे, हमारा मन हमें टोकेगा, रोकेगा और हो सकता है बाधा पहुंचाए, क्योंकि गुरु बनाते ही हम किसी के प्रति समर्पित हो जाते हैं। उसके शब्द हमारे शब्द बन जाते हैं। गुरु की हां और ना में हमारी भी स्वीकृति, अस्वीकृति जुड़ जाती है। यदि हम मन का कहना नहीं मानते तो वह अड़चन पैदा करता है। गुरु के जीवन में आते ही प्रेम और भक्ति का अभ्यास सरल होने लगता है। हम कर्मकांड से थोड़ा ऊपर उठकर भक्तियोग की ओर चलने लगते हैं। गुरु बनाना अपने आप में एक कर्मकांड है, लेकिन इसकी प्रतिष्ठाया में योग बसा है। हम तीर बन जाते हैं और गुरु धनुष। बिना धनुष की तीर का कोई महत्व नहीं है, लेकिन जब गुरु रूपी खिंचे हुए धनुष पर शिष्य रूपी तीर चढ़ता है तो उसकी यात्रा फिर परमात्मा ही होती है। जैसे ही हम गुरु के प्रति समर्पित हुए, हमारी समग्र शक्ति गुरु की शक्ति से मिल जाती है और उनकी हमसे। यह सही है कि गुरु के जीवन में आने पर पहले प्रेम जागेगा और फिर श्रद्धा उत्पन्न होगी। प्रेम और श्रद्धा में फर्क है। प्रेम-प्रेमिका सिर्फ प्रेम



करते हैं, उनके बीच श्रद्धा नहीं रहती, इसलिए एक दिन आप उनको अलग-अलग भी पाएंगे। लेकिन जैसे ही प्रेम में श्रद्धा जुड़ी, तब हमारी प्राण ऊर्जा ऊपर उठेगी और सीधे आत्मा से मिल जाएगी। इसीलिए प्राणायाम करते समय श्रद्धा बहुत जरूरी है। जिस गुरु मंत्र के साथ प्राणायाम किया जाए, उसमें श्रद्धा हो तो ऊर्जा मूलाधार चक्र से सहस्रार तक आसानी से उठ जाएगी। इसमें संसार से कुछ भी नहीं छूटेगा, लेकिन परमात्मा से जुड़ाव जरूर हो जाएगा।

क्रांति-कथा



क्रान्ति-कर्म से करुणा रही

क्रान्ति-है सद्कर्म की कथा-है मानव धर्म की

मैं पहले निंदा सुनता था अब मैं सत्संग सुनने लग गया। पहले कुछ का कुछ काला भूरा नॉनवेज वो सब मुँह में डालने का पाप कर लेता था। वो मेरा पाप छूटा अब मैं शाकाहारी जीवन जीता हूँ। अब मैं क्रांति कथा पूरे विश्व भर में एक हजार एक स्थानों पर करवाऊंगा मेरे मित्र ने मेरे प्राण बचाए कल के लिये एहसान किया उस एहसान का बदला जीवन के अन्तिम क्षणों तक एक हजार एक आपका जीवन बदल रहा है।

सीख बड़ो की है वही, जो सत पथ दिखलाय।
सेवा मदद सहायता से, जग उजियारा हो जाय।।

मेरा जीवन बदल रहा है एक भाई बाल कटिंग कराने गये पूछते भईया बाल कब से बढ़ने लगे बोले बाबुजी, इसी क्षण से जैसे क्षण से मैंने आपका बाल काटे उसी क्षण से बाल का एक सेंटीमीटर में हजार वाँ हिस्सा बढ़ गया। और आप आगे के यदि आप 61 साल के 61 साल हुए एक क्षण हो गया 61 साल में बहुत क्षण हो गये 61 साल पाँच महीने हो गये 71 साल हो गये 81 हो गये। एक सेठ बैठे दुकान पर जमा खर्च खुद जोड़ रहे कितना लेना कितना देना बड़े गौर से खोज रहे और काल बली की चोट पड़ी तब कलम कान पर टकी काम नहीं आया ये अंगुठियाँ ये मेरे रेशमी के अच्छे कपड़े काम नहीं आए काम आया।

क्षण भंगुर है रूपये क्यों इतना इतराय।
ज्यो सूरज की धूप सम, उतरें और चढ़ जाय।।

क्रांति कथा दूसरा रूप काम आया क्रांति कथा का क्षमा बांध काम आया विद्या ददाति विनयम् और जिस तरह से उन सेठ जी को उनके तनाव मिटे उनके चिंताए मिटी उनके मन में आनंद हुआ ऐसा ही आनंद इस क्रांति कथा को सुनने वाले आप सब भक्तों को प्राप्त हो। आनन्द है परमानन्द है, तेरा भाणा मीठा लागे, सारे काम राजी-राजी। हाँ भाईयो बहनों अब क्रांति कथा का माहात्म्य न दूसरा माहात्म्य एक परिवार में माता पिता परिवार का युवा लड़का उसकी पत्नी एक ऐसी बेटी जो जन्म से ही दिव्यांग थी और एक बेटा बहुत टेन्शन में बैठा था, महाराज पड़ोसी तक को आज कल मिया बीबी का झगड़ा शान्त कराना पड़ता है।

क्रमशः अगले अंक में...

अपंग, अनाथ, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवार्त्

निःशक्तजनों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए संस्थान द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। आपश्री से सादर प्रार्थना है कि इश्वरीय कार्य में अपना सहयोग प्रदान करावें-मान्यवर !

मोबाइल/होम एप्लायसेंस रिपेयरिंग/कम्प्यूटर/सिलाई/महेन्दी/अगरबत्ती/हार्डवेयर एण्ड नेटवर्किंग प्रशिक्षण सौजन्य राशि	1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7500/-	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000/-
	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22500/-	20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 150000/-
	5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37500/-	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 225000/-

50 राशियों की आजीवन भोजन/नाश्ता मिती
वर्ष में एक दिन दोनों समय की आजीवन भोजन मिती सहयोग राशि - 22,000/-
वर्ष में एक दिन एक समय की आजीवन भोजन मिती सहयोग राशि - 11,000/-
वर्ष में एक दिन की आजीवन नाश्ता मिती सहयोग राशि - 5,000/-
बालगृह शिक्षा सहयोग योजना
एक बच्चे के एक माह की शिक्षा सहयोग राशि - 600/-
एक बच्चे के एक वर्ष की शिक्षा सहयोग राशि - 7200/-

आजीवन लालन-पालन योजना 1,00,000/-
आप बन सकते हैं किसी अनाथ निर्धन बच्चे को आजीवन पालनहार 1 लाख रूपयों का अनुदान करके। (एक बच्चा 18 वर्ष तक की आयु तक अथवा 18 वर्ष के बाद भी यदि वह उच्च शिक्षण प्राप्त कर चाहेगा तो संस्थान के सान्निध्य में ही रहेगा।)

भगवान महावीर बालगृह योजना (बालगृह भोजन मिती)
एक बालक का एक माह का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि - 2100/-
एक बालक का एक वर्ष का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि- 2100 X12 =25,200/-

एक बच्चे पर सम्पूर्ण वार्षिक राय
भोजन खर्च सहयोग राशि - 2100 X12 = 25,200/- शिक्षा खर्च - 600 X 12 = 7200 /-
स्वास्थ्य सम्बन्धी खर्च - 2500/- विविध खर्च राशि - 6900/-
कुल वार्षिक खर्च सहयोग राशि - 41800/-
प्रति निःशक्त शिविर सहयोग राशि - 1,51000/-
सम्पर्क करें-09929534444 E-mail : planning@narayanseva.org
आयकर में छूट-संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 G (आयकर दाता) के लिए 50 प्रतिशत तथा 35 AC के तहत (कम्पनियों, प्रतिष्ठानों के लिए) 100 प्रतिशत कर मुक्त (Tax Exempted)

सादर अनुरोध - आपश्री संस्थान की दान प्राप्ति रसीद वुक प्राप्त करन हेतु सम्पर्क करें -0294-6622222,9649499999

■ इच्छा शक्ति कल्पवृक्ष के समान है जो आपको हर वो चीज दे सकती है जिसको आप कल्पना करते हैं।

इतना बड़ा बंगला, बहुत मुबारक हो, क्या इसके पहिये लगे ? क्या इसको आप साथ ले जायेंगे ? नहीं, आपके साथ आपका बंगला नहीं जायेगा, इस बंगले का सदुपयोग कर लीजिए, सन्तों को बुलाइये, सच्चे सेवावृत्तियों को बुलाइये और जिस तरह नारायण सेवा उदयपुर में आकर आप ने कृतार्थ किया है, वैसे ही कृतार्थ करके अपने पितृ को श्रद्धांजलि दीजिये, आपके पुत्र - पुत्रियों को संस्कार देना बहुत बड़ा धर्म है।

महीम जी - उसने ही जाना है जीवन का सार, जिसने विकलांगो और बेबस को दिया थोड़ा सा प्यार। इस थोड़े से प्यार से यह नारायण सेवा संस्थान इतना बड़ा प्यार का सागर बन गया। आइये झाँकियों के माध्यम से उस दृश्य का अवलोकन करें, जो आपकी अपनी नारायण सेवा संस्थान जो आपके प्यार से महकती है उसका अवलोकन करते हैं। जहाँ एक छोटा सा बालक जिसके लार टपकती है, माँ की गोद में, एक विकलांग बैसाखी साथ लेकर चल रहा है। दूसरा विकलांग रेंग-रेंग कर, जिसके दोनों घुटनों पर पट्टियाँ बँधी हुई हैं और खून बह रहा है, ये झाँकी का नारायण सेवा संस्थान का दृश्य, संगीत की स्वर लहरियों के साथ -

तर्ज :- थाली भरने लाई
कितनी निःशक्तता है जग में,
दिव्यांग है ये विकलांग है ये।
टढ़े-मेढ़े इन पाँवों से,
चलते और चले जा रहे। (35)
जो खड़े तलक नहीं हो सकते,
जो बैठ भी ठीक नहीं पाते।
यह देख बहुत दुःख होता है,
बेचारे उठ भी नहीं सकते। (36)
क्यूँ लार निकलती है मुँह से,
उनकी माँ देख के रोती है।
औरों के बच्चे देख-देख,
मन ही मन सिसकी भरती। (37)

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल न्अध्यक प्रबन्धक-स्रोत लाल गाडनी संपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी संपादन सत्योगी-घनश्याम मिश्र नरौड़